बनास जन

अलविदा...

शेखर जोशी

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. के. सी. शर्मा, चित्तौड़गढ़
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 100 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–125 रुपये
200 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–225 रुपये
5000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
8000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात		5
आत्मकथ्य और कविताएँ	विनय सौरभ	7
वसीयत		
मन की बात	शेखर जोशी	18
श्रद्धांजलि		
सर्वोत्तम से कम....मंजूर नहीं	रणजीत साहा	22
प्रसंग		
प्रेमाश्रम के सौ बरस	विभास वर्मा	30
बनास जन विशेष		
भारत की स्वतंत्रता का अमृत उत्सव : कुछ विचार	अरुण चतुर्वेदी	34
हिंग्लिश लाइव : मीडिया के आर-पार	फ्रैंचेक्का ओर्सीनी, रविकान्त	44
क्षणिक और अराजक स्थितियों के बीच शाश्वत या चिरस्थायी की अनवरत खोज	संजय कुमार	51
कहानी		
रिंगटोन	रश्मि शर्मा	79
पापा के लिए चिट्ठी	सविता पाठक	87
कद्दू	राहुल श्रीवास्तव	93
आयुष्मान पूर्णिमा	कैलाश बनवासी	103
मुखबिर मोहल्ले का प्रेम	लोकबाबू	108
कविताएँ		
हिलाल अहमद 'आतिश'		117
शंकरानंद		119
नरेश चन्द्रकर		123
अनंत भटनागर		126
राघवेंद्र रावत		129
वीना करमचन्दाणी		131
कथेतर		
लिखने के लिए : कल्पना और स्मृतियों से	प्रदीप्त प्रीत	133
हिंदू कॉलेज, इंद्रप्रस्थ और कमलेश्वर	प्रभात रंजन	137
कुर्ला से कोलाबा	अनुराग चतुर्वेदी	141

सुदामा का घर	सत्यनारायण व्यास	144
वे दिन--वह बीकानेर!	हेमंत शेष	151
बनस्थली डायरी	सुमंत पंड्या	163
कामरेड दीदी	रामशरण जोशी	166

वसुधैव कुटुम्बकम्

विलियम बटलर येट्स	अनूप बेनीवाल	192

इतिहास

अंतर्सामुदायिक संवाद की एक ऐतिहासिक पहल	शम्स तबरेज	196
जवाहरलाल नेहरू और शान्तिनिकेतन	शुभनीत कौशिक	203

नवजागरण

इतिहास तिमिरनाशक का रचना विधान	संजय कुमार	211

बहस

नवजागरण की वैचारिक नियति : प्रकाश का अँधेरा पक्ष	सुधा चौधरी	216

साहित्यिकी

वर्गीकरण से बाहर : रैदास और उनकी कविता	माधव हाड़ा	234
रघुनन्दन त्रिवेदी का कथा संसार	मोहन कृष्ण बोहरा	242
विसंगति और विडंबनाबोध के कहानीकार : अमरकांत	इन्दू कुमारी	259

दलित सवाल

'अपने-अपने पिंजरे' : अस्मिता, अस्तित्व, संघर्ष की दास्तान	नामदेव	264

रंगमंच

रंगमंच और सिनेमा का अंतर्संबंध	धर्मेंद्र प्रताप सिंह	271

समीक्षाएँ

इतिहास की भूलों पर विचार करती कविताएँ	यवनिका तिवारी	276
तमाम अंतरंग एवं बहिरंग उद्‌भावनाओं के बीच कविता	सरिता तिवारी	285
परमाणु शक्ति के उन्माद में पखावज़ की गूँज	रेनू त्रिपाठी	291
खुरदरी जमीन पर प्रेम का स्वप्न	मीना बुद्धिराजा	296
ग्लोबलाइजेशन और विस्थापितों का जीवन	रीता सिन्हा	300
सिद्धान्तिकियों और रचना के बीच आवाजाही	राजकुमार	304
कोई उम्मीद बर नहीं आती....	रामेश्वर राय	313

अपनी बात

कोरोना चला गया। कोरोना का भय भी अब लगभग समाप्त है। इस अंतराल के बाद फिर आयोजनों और गतिविधियों का सिलसिला चल पड़ा है। प्रकाशक खुश हैं कि पुस्तक मेले हो रहे हैं। बड़े शिक्षण संस्थान खुल गए हैं और सभा समारोह भी पूर्ववत होने लगे हैं। साहित्य उत्सव या लिटरेचर फेस्टिवल भी लौट आए हैं। इस बार के ऐसे फेस्टिवल के साथ फिर विवाद शुरू हुआ है कि आखिर लेखकों को ऐसे लिटरेचर फेस्टिवल में जाना चाहिए या नहीं? यह सवाल लेखक की तरफ बढ़ा दिया गया है और लेखक से अपेक्षा की जा रही है कि वह सिद्धांतों और नैतिकता का स्मरण करते हुए जवाब दे। लेखक का जवाब है कि वह किसी भी लिटरेचर फेस्टिवल में क्यों न जाए? उसके पाठक हर तबके के हैं। केवल उससे जवाब क्यों माँगा जा रहा है? क्या वह किसी दल या लेखक संगठन का सदस्य है जो उसके बनाए नियमों से बंधा रहे? लेखक तो सर्जक है। वह तो ब्रह्मा की तरह सृष्टा है उसे इन सवालों से क्या लेना देना?

सवाल पूछे जा रहे हैं कि क्या आज का लेखक खुद को कबीर, नजीर और प्रेमचंद की परम्परा का वारिस नहीं मानता? यदि मानता है तो उसे सत्ता प्रतिष्ठानों का मोह छड़कर जनता के पक्ष में खड़े होने के हिम्मत रखनी होगी। अब लेखक इसका क्या जवाब दे? यह तो सही है कि उसकी हसरत है कि उसे कबीर या प्रेमचंद न भी माना जाए तो रेणु या अज्ञेय जितना मान तो मिलना ही चाहिए। उसके फेसबुक पर हजारों फालोवर हैं। उसके एक पोस्ट या ट्वीट पर सैंकड़ों कमेंट्स आते हैं। प्रकाशक उसकी किताब की पांडुलिपि लेते हुए उसके फेसबुक और ट्विटर खाते का वजन तौल कर मुस्कुराते हैं। फिर वह अगर लिटरेचर फेस्टिवल में न जाए तो उसके फेसबुक या ट्विटर पर क्या पोस्ट बनेगी? प्रसिद्धि का आकर्षण किसको प्रिय नहीं होता? कौन लेखक है जो नहीं चाहता कि उसका लिखा एक-एक वाक्य लाखों पाठकों तक पहुँचे। इस काम में अगर लिटरेचर फेस्टिवल से मदद मिल रही है तो वह क्यों न जाए? यदि ऐसे फेस्टिवल के प्रायोजक पूँजीपति हैं तो इसमें उसका क्या दोष? और भला पूँजीपति किसके प्रायोजक नहीं हैं?

तो इस बहस का क्या समाधान हो सकता है? आप कहेंगे लेखक वहाँ जाकर भी तो उसी विचार को रखता है जिसके आधार पर उसे पाठकों की मान्यता मिली है। लेकिन क्या हम भूल जाएँ कि खबर का मुँह जब विज्ञापन से ढँक जाता है तो खबर का वास्तविक असर पीछे रह जाता है।

लेखक संगठन निस्तेज हो गए हैं। जिस राजनैतिक विचार से संगठनों को शक्ति मिलती थी उसका पराभव हो गया मालूम होता है। और कहा जा सकता है कि अंततः एक लेखक को उसके जीवन में किंचित यश, प्रसिद्धि और सम्मान मिल जाए तो क्या हर्ज है? लेकिन कुम्भनदास सीकरी नहीं गए थे। तुलसीदास दरबारी कवि नहीं हुए और हमारे देखते देखते समान्तर कहानी आंदोलन के वे कथाकार जो 'सारिका' जैसी पत्रिका में छाये रहते थे न जाने कहाँ भुला दिए गए। यह एक लेखक को ही तय करना होगा कि उसकी वास्तविक जगह कहाँ है? पुरस्कार, मंच और यात्राएँ थोड़े समय के लिए प्रसिद्धि का सुख दे सकते हैं किन्तु एक लेखक का वास्तविक मूल्यांकन उसकी रचनाओं से ही होता है। उसकी उपस्थिति और प्रचार से उसकी किताबों की बिक्री पर सकारात्मक असर हो सकता है लेकिन उसके लेखन की असल हैसियत उसकी अनुपस्थिति पर ही मापी जा सकेगी।

हमारा संसार, देश और समाज गहरे संक्रमण से गुजर रहा है। एक तरफ बाजार का जबरदस्त